महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय,मोतिहारी,बिहार

मानविकी एवं भाषा संकाय

संस्कृत-विभाग

एम.फिल्./ पी-एच.डी

प्रश्न पत्र- प्रथम

पाठ्यशीर्षक- संस्कृत शोध प्रविधि

कोड-SNKT ५००१

उपशीर्षक : संस्कृत विपयक शोध समस्या

प्रस्तुत कर्ता

डॉ.बबलू पाल

सहायक आचार्य

संस्कृत विभाग

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय,

मोतिहारी,बिहार

समस्यामूलक शोध के स्रोत

- व्यक्तिगत अनुभव
- व्यावहारिक अनुभव
- पूर्वकृतशोध कार्य
- साहित्य समीक्षा
- सामाजिक मुद्दे

शोध समस्या निर्माण के चरण

- विषय-क्षेत्र की पहचान
- समस्या परिभाषा एवं पहचान
- साहित्यक सर्वेक्षण
- सामग्री-संकलन
- शोध का आनुप्रायोगिक परिणाम
- विषय एवं दत्त-सामाग्री चयन की तकनीकी
- प्रकाशन एवं सम्प्रेषण परिणाम

संस्कृत में शोध समस्या

- प्रमातागत शोध समस्या
- प्रमाणगत शोध समस्या
- प्रमेयगत शोध समस्या
- प्रमितिगत शोध समस्या

(क). प्रमातागत शोध समस्या

- अन्वेषक
  - भाषागतसमस्या
  - शैलीगतसमस्या
  - पृष्ठभूमिगत समस्या
- पाठक
  - संवाद अवबोधन की समस्या
  - पृष्ठभूमिगत समस्या

(ख). प्रमाणगत समस्या

१. आगमनात्मक

- सामग्री संकलन का अभाव
- सामग्री के वैज्ञानिक विश्लेषण का अभाव
- अन्तर्विषयक चिन्तन पद्धति का अभाव
- बहुविषयक चिन्तन पद्धति का अभाव

२. निगमनात्मक

२. निगमनात्मक-

यथार्थज्ञान के लिए परार्थानुमान के पञ्चावयव को निगमनात्मक शोध पद्धति में रखा जा सकता है। क्योंकि इस पद्धति में सामान्य के आधार पर विशेष का प्रतिपादन किया जाता है।

- प्रतिज्ञा- पर्वतोऽग्निमान् अर्थात् पर्वत अग्निमान है।
- हेतु- धूमवत्वात्
- उदाहरण- यो यो धूमवान् सो सोऽग्निमान्। यथा- महानस।
- उपनय- तथा चायम्।वह्निव्याप्य-धूमवांश्चायम्
- इसलिए यह भी वैसा ही है,अर्थात् अग्निमान् है।

संस्कृत में निगमनात्मक शोध प्रविधि से उत्पन्न शोध का स्वरूप

वस्तुत: संस्कृत के परम्परागत क्षेत्रों में निगमनात्मक शोध पद्धति की ही प्रधानता जिसका है जिसका स्वरूप निम्न प्रकार से है-

- सूत्र – अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवत्विश्वतोमुखम्।
  अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदु:॥
- वृत्ति- सकलसारविवरणनं वृत्ति:
- भाष्य- भाषणाद्भाष्यम्
- टीका- यथासम्भवमर्थस्य टीकनं टीका
- प्रकरण-शास्त्रैकदेशसम्बद्धं शास्त्रकार्यान्तरे स्थितम्।
  आहु: प्रकरणं नाम ग्रंथभेदं विपश्चित:॥

आगमनात्म शोध

गत्यात्मक शोध क्षेत्र के सर्वेक्षण पर आधारित तथ्यों के संकलन एवं उसके वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर नियमों या निद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता है जो आधिभौतिक विकास के लिए उपादेय है। अमेरिक,चीन,जर्मनी आदि पाश्चात्य देशों में इस प्रकार की प्रविधि का प्रयोग किया जाता है।

निगमनात्मक शोध

स्थैतिक शोध क्षेत्र के सर्वेक्षण पर आधारित तथ्यों के संकलन एवं उसके वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर नियमों या निद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता है जो आध्यात्मिक विकास के लिए उपादेय है।

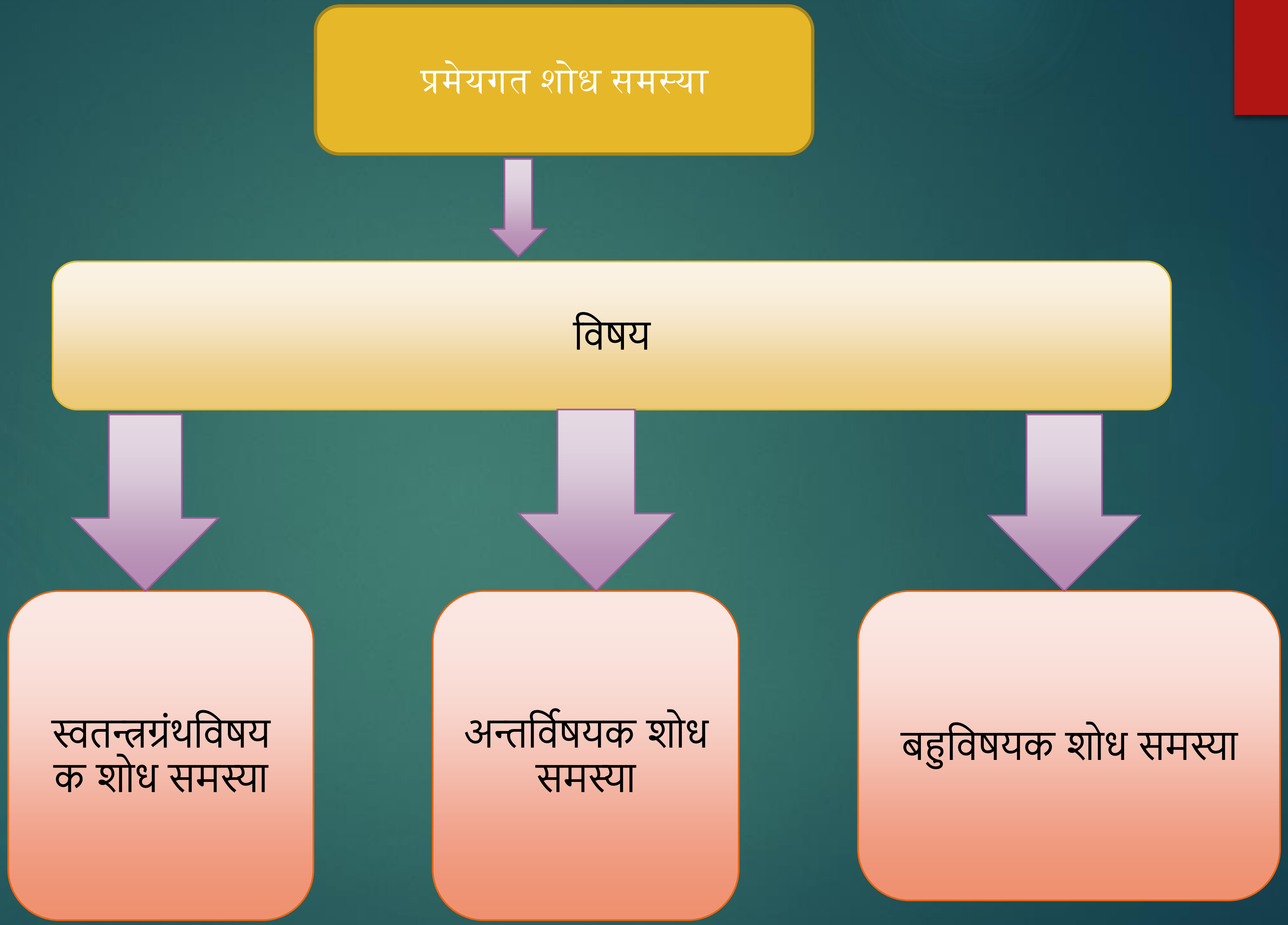

प्रमेयगत शोध समस्या
विषय
स्वतन्त्रग्रंथविषयक शोध समस्या
अन्तर्विषयक शोध समस्या
बहुविषयक शोध समस्या

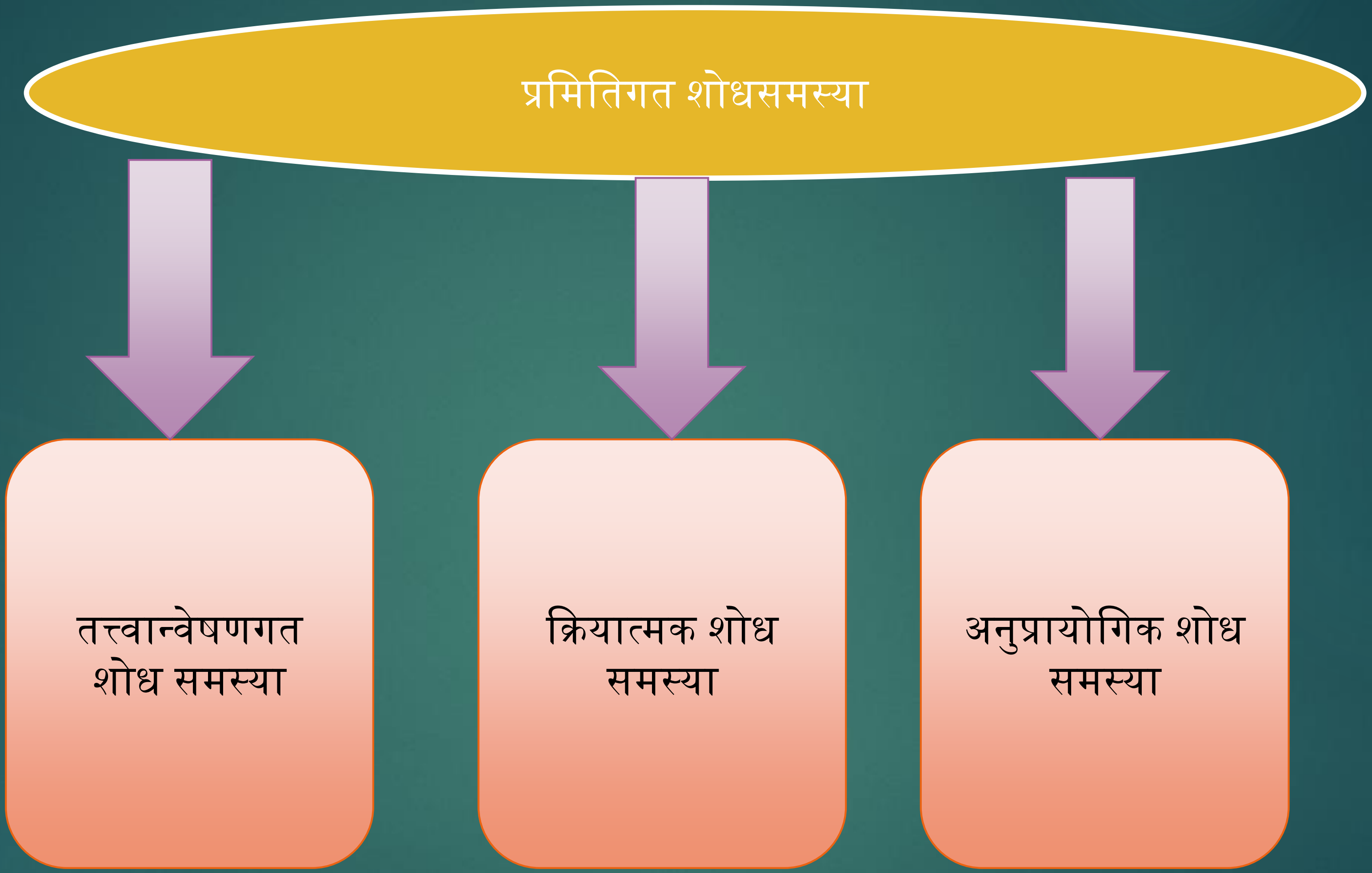
प्रमितिगत शोधसमस्या
तत्त्वान्वेषणगत शोध समस्या
क्रियात्मक शोध समस्या
अनुप्रायोगिक शोध समस्या

निष्कर्ष :

संस्कृत में समस्यामूलक शोध को उक्त चार प्रकार –प्रमाता,प्रमाण,प्रमेय एवं प्रमिति के आधार पर संस्कृत वाङ्मय के प्रत्येक क्षेत्र की समस्याओं का अध्ययन करते हुए नवीन दृष्टि से विषयों का यथार्थज्ञानपूर्वक प्रकाश में लाया जा सकता है। आगमनात्मक एवं निगमनात्मक ये दो प्रमुख शोध प्रविधियां समस्यामूलक शोध के लिए अत्यन्त ही उपादेय हैं। जहां गत्यात्मक शोध क्षेत्र के सर्वेक्षण पर आधारित तथ्यों के संकलन एवं उसके वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर नियमों या निद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता है जो आधिभौतिक विकास के लिए उपादेय है। वहीं निगमनात्मक प्रविधि के आधार पर आध्यात्मिक जगत् की समस्याओं का भी नूतन दृष्टि उपस्थापित हो सकती है। भारत में इस प्रविधि की प्रधानता अधिक है। दोनों प्रकार की प्रविधियां आधुनिक जगत् के लिए उपादेय हैं क्योंकि भौतिक विकास के साथ-साथ आत्मज्ञान भी परम आवश्यक है।

सन्दर्भग्रंथ-सूची

Murty,Srimannarayana,Methodology in Indological,Delhi: Bharatiya Vidya Prakashan,1990
Katre, S.M.(with P.K.Gode), Introduction to Indian Textual Criticism, Poona: Deccan College,1954
The Vālmīki Rāmāyana(critical Edition),Oriental Institute of Baroda,1958
Critical Edition of Māhābhārata,BORI,Poona,1966
वैदिक-शोध प्रविधि,डॉ.कृष्ण लाल,दिल्ली
तर्कभाषा,गजानन शास्त्री,मुसलगाँवकर्,चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन,वाराणसी,२०१७
काव्यमीमांसा, डॉ.गंगासागर राय,चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी

धन्यवाद